प्रातः क्लास 8/7/68 ओमशान्ति पिताश्री "शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। रूहानी बच्चे ही इन कानों द्वारा सुनते हैं। बेहद का बाप बच्चों को कहते हैं अपन को आत्मा समझ बैठो। यह घड़ी–2 कहना पड़ता है। जिनकी बुद्धि बाहर में चक्र लगाती होगी वह सुनने से झट सथियरम(स्थिरियम) हो जावेंगे। अपन को आत्मा समझ सुनेंगे। बच्चे समझते हैं हम यहां आये हैं देवता बनने। हम एडॉप्ट बच्चे हैं। हम ब्राह्मण पढ़ते हैं। क्या पढ़ते हैं। ब्राह्मण से देवता ब(न)ने पढ़ते हैं। जैसे कोई कॉलेज में बच्चे पढ़ते हैं समझते हैं हम अभी पढ़कर फलाना बनेंगे। बैठने से ही झट समझेंगे तुम भी ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण बनते हो। तो समझते हो हम ब्राह्मण से देवता बनेंगे। गाया हुआ भी है मनुष्य से देवता..... ; परन्तु कौन मनुष्य से देवता बनते हैं? हिन्दू सभी तो देवता बनते नहीं। वास्तव में हिन्दू तो कोई देवता है नहीं। आदि सनातन कोई हिन्दु धर्म नहीं है। कोई से भी पूछो हिन्दु धर्म किसने स्थापन किया? तो मुंझ जावेंगे। यह अज्ञान से नाम रख दिये हैं। हिन्दुस्तान में रहने वाले अपन को हिन्दु कहते हैं। वास्तव उनका नाम भारत है नर्क हिन्दुस्तान। भारत सच्चखण्ड था न कि हिन्दुस्तान खण्ड। यह है ही भारत। तो उन्हों को भी यह पता नहीं है कि यह कौन सा खण्ड है। अपवित्र होने कारण अपन को देवता तो समझ न सके। देवी–देवताएं पवित्र थे। स्त्री–पुरुष दोनों ही पवित्र थे। अभी वह धर्म है नहीं। और तो सभी धर्म आते हैं। बुद्ध का बौद्ध धर्म। इब्राहीम का इस्लाम धर्म, क्राइस्ट का क्रिश्चियन धर्म। बाकी हिन्दू धर्म का तो कोई है नहीं। यह हिन्दुस्तान नाम तो फानेर(फॉरेन) ने रखा है। पतित होने कारण अपन को दैवी धर्म का समझते ही नहीं। दैवी धर्मभ्रष्ट–कर्मभ्रष्ट है; इसलिए अपन को हिन्दू कह देते हैं। बाप ने समझाया है आदि सनातन देवी–देवता धर्म। पुरानी ते पुरानी। शुरू का धर्म कौन सा है ? देवी–देवता। हिन्दू नहीं कहेंगे। अभी बाप ने समझाया है तुम आदि सनातन देवी देवता धर्म के हो। स्कूल में पढ़ने लिए बैठते हैं, समझते हैं हम डॉक्टरी पढ़ते हैं। डॉक्टर बन जावेंगे। तुम भी पढ़ते हो। समझते हो ..... मनुष्य से देवता ..... जावेंगे। अभी ब्रह्मा के एडॉप्ट बच्चे ब्राह्मण हो गये। हम ब्राह्मण से देवता बनने लिए पढ़ते हैं। ऐसे नहीं कि हिन्दु से देवता बनने लिए पढ़ते हैं। ब्राह्मण से देवता बनते हैं। देवता पद प्राप्त कराने लिए ही बाप को आना पड़ता है। याद भी सभी उनको ही करते हैं कि आकर पवित्र नई दुनियां की स्थापना करो। पतित–पावन बाप को ही समझते हैं न कि कृष्ण को। ऊँच ते ऊँच भगवान गाया जाता है। वह है निराकार। यह अच्छी रीत धारण करना है। अभी तो देखो कितने ढेर धर्म हैं। एड होते ही जाते हैं। जब भी कहां भाषण आदि करते हो तो यह समझाना अच्छा है। अभी है कलियुग। सभी धर्म अभी तमोप्रधान आयरन एजेड हैं। चित्र पर बैठ तुम समझावेंगे तो फिर वह घमण्ड टूट जावेगा। मैं फलाना हूँ, यह हूँ। समझेंगे हम तो तमोप्रधान हैं। पहले–2 बाप का परिचय दे फिर दिखाना है यह पुरानी दुनिया बदलनी है। दिन–प्रति–दिन चित्र भी शोभनिक होते जाते हैं। चक्र पर तुम बहुत क्लीयर समझा सकते हो। जैसे स्कूल में नक्शे बच्चों की बुद्धि में होते हैं। तुम्हारी बुद्धि में फिर यही रहनी चाहिए। नम्बरवन जैसे यह है। ऊपर में त्रिमूर्ति भी है। दोनों गोले भी हैं। सतयुग और कलियुग। नई दुनियां और पुरानी दुनियां। अभी हम पुरुषोत्तम संगम युग पर हैं। यह पुरानी दुनियां विनाश हो जावेगी। एक आदि सनातन देवी देवता धर्म स्थापन हो रहा है। तुम यह जानते हो तब तो कहते हो ना। और कोई भी मनुष्य यह बातें नहीं जानते हैं। कोई भी विद्वान, पंडित आदि यह नहीं बताते। बेहद का बाप ही तुम बच्चों को समझाते हैं। वही सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त को जानते हैं। दूसरा कोई जानते ही नहीं। हिन्दु धर्म के तो कोई चित्र ही नहीं हैं। तुम हो ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म के। हिन्दु धर्म तो है नहीं। जैसे संन्यासिय(ों) ब्रह्म रहने के स्थान को ईश्वर समझ लिया है वैसे ही हिन्दुस्तान में रहने वालों ने हिन्दू धर्म समझ लिया है। उनका भी फर्क है, तुम्हारा भी फर्क है। देवी–देवता नाम तो बहुत ऊँच है। कहते हैं यह तो जैसे देवता है। दैवी गुण वाला। जिनमें अच्छे गुण होते हैं तो ऐसे कहते हैं। इनमें देवताई गुण है। तुम समझते हो जो भी बड़े–2

पंडित आदि हैं संस्कृत आदि पढ़ने वाले वह इस आदि सनातन देवी देवता धर्म के बात भी नहीं जानते। भल नाम भी लेते हैं शिव; परन्तु उनका आक्युपेशन बतलाते नहीं। कृष्ण का, विष्णु का बताते हैं। यह भी नहीं समझते राधे–कृष्ण ही ल०ना० बनते हैं। ल०ना० ही विष्णु बनते हैं। यह बातें अभी तुम जानते हो। राधे कृष्ण ही स्वयंवर पश्चात् ल०ना० बनते हैं। उनको विष्णु भी कहा जाता है। चित्र भी सभी के हैं; परन्तु कोई भी मनुष्य नहीं जिसको यह बुद्धि में हो कि राधे–कृष्ण ही ल०ना० बनते हैं। तुम बच्चों को अभी बाप बैठकर समझाते हैं। बाप को ही सभी याद करते हैं। ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जिसके मुख में भगवान न हो। अभी भगवान तो कहा जाता है निराकार को। निराकार का भी अर्थ नहीं समझते हैं। कितना मुंझते हैं। बिल्कुल ही ईडियट्स तमोप्रधान बन गये हैं। तुम बच्चे समझते हो बरोबर हम पहले तमोप्रधान ईडियट थे। कुछ भी नहीं जानते थे। कहते भी हैं ना तुम तो जनावर पत्थर बुद्धि हो। तुम पढ़ते नहीं हो। पत्थर बुद्धि हो क्या। स्टूडेन्ट ठीक न पढ़ेंगे तो टीचर ऐसे ही कहेंगे ना। अभी तुम सभी कुछ जानते हो। पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बन जाते हो। यह नालेज भारतवासियों के लिए ही है। न कि विलायत वालों के लिए। न उन्हों का कब ख्याल रखना है। वह तो आते ही पीछे हैं। तुम्हारा कनेक्शन नहीं है। बाकी यह समझा सकते हो इतनी वृद्धि कैसे हुई है। और खण्ड आते गये हैं। वहां तो भारत खण्ड के सिवाय और कोई खण्ड नहीं रहेगा। अभी वह एक धर्म है नहीं। बाकी सभी खड़े हैं। बनीयन ट्री का मिसाल एक्युरेट है। आदि सनातन देवी–देवता धर्म का फाउन्डेशन है नहीं। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। तुम कहेंगे आदि सनातन देवी देवता धर्म था न कि हिन्दू। तुम अभी ब्राह्मण बने हो देवता बनने के लिए। पहले–2 ब्राह्मण जरूर बनना पड़े। शूद्र वर्ण से ब्राह्मण वर्ण में आये हो। शूद्र वर्ण और ब्राह्मण वर्ण कहा जाता है ना। शूद्र डिनायस्टी नहीं कहेंगे। शूद्र वर्ण, ब्राह्मण वर्ण। वह डिटी डिनायस्टी नहीं कहेंगे। अभी उनका नाम बदल हिन्दू डिनायस्टी कर दिया है। अपवित्र भी तब से ही बने हैं। हिन्दू राजाएं रानियां हैं। पहले देवी देवताएं महाराजा महारानी थे। यहां है हिन्दू महाराजा–महारानी। भारत तो एक ही है फिर वह अलग यह अलग कैसे हो गये। उन्हों का नाम निशान ही गुम कर दिया है। सिर्फ़ चित्र है। नम्बरवन है सूर्यवंशी। राम को सूर्यवंशी नहीं कहेंगे। अभी तुम आये हो सूर्यवंशी बनने लिए न कि चंद्रवंशी बनने के लिए। यह राजयोग है ना। तुम्हारी बुद्धि है ह(म) यह बनेंगे। दिल में खुशी रहती है बाबा हमको यह पढ़ाते हैं। महाराजा–महारानी बनने। सत्य ना० सच्ची कथा यह है। आगे जन्म–जन्मान्तर तुम सत्य ना० की कथा सुनते आये; परन्तु वह सभी हैं झूठी कथाएं। अभी तुम बच्चे समझते हो वह था भक्ति मार्ग। यह है ज्ञान मार्ग। भक्ति मार्ग में कब मनुष्य से देवता बन न सके। मुक्ति जीवन मुक्ति पा न सके। सभी मनुष्य मुक्ति, जीवन–मुक्ति चाहते जरूर हैं। अभी सभी हैं बन्धन में। ऊपर से आत्मा आज भी आवेगी तो जीवनमुक्ति में आवेगी। न कि जीवन बन्धन में। आधा समय जीवनमुक्ति आधा समय बन्धन में जरूर जावेगा। यह खेल बना हुआ है। इस बेहद के खेल के हम सभी एक्टर्स हैं। यहां आते हैं पार्ट बजाने। कैसे आते हैं यह भी बातें बाप बैठ समझाते हैं। कैसे आत्माएं यहां ही पुनर्जन्म लेती रहती हैं। तुम बच्चों को शुरू से लेकर अन्त तक सारी वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी बुद्धि में है। दुनिया में यह कोई नहीं जानते हैं। बेहद का बाप ऊपर में रहते क्या करते हैं कुछ भी नहीं जानते। इसलिए उन्हों को कहा जाता है तुच्छ बुद्धि। तुम भी तुच्छ बुद्धि थे। भल कितने भी बड़े–2 वजीर, अमीर, एम०पी० आदि हैं उन्हों को तुच्छ बुद्धि ही कहेंगे। तुम जानते हो, तुमको ही बाप रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अन्त का राज़ समझाते हैं। तुम गरीब साधारण सभी कुछ जानते हो। वह लखपति, करोड़पति कुछ भी नहीं जानते हैं। तो तुच्छ बुद्धि ठहरे ना। तुम हो स्वच्छ बुद्धि। तो देखो तुम अभी क्या से क्या बन रहे हो। स्कूल में भी पढ़ाई से ऊँच पद पा सकते हैं। यह तुम्हारी पढ़ाई फिर है ऊँच ते ऊँच। जिससे तुम राजाई पद पाते हो। वह तो दान–पुण्य करने से राजा पास जन्म लेने से प्रिन्स बनते हैं। फिर राजा बनते हैं।

परन्तु तुम इस पढ़ाई से राजा बनते हो। बाप ही कहते हैं मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखाता हूँ। सिवाय बाप के और कोई राजाई नहीं पढ़ाते हैं। बाप ही तुमको पढ़ाते हैं। तुम फिर दूसरों को समझाते हो। बाप राजयोग सिखलाते हैं। तो तुम पतित से पावन बन जाओ। अपन को आत्मा समझ और निराकार बाप को याद करो। तो तुम पवित्र बन जावेंगे। फिर चक्र को जानने से चक्रवर्ती राजा सतयुग में बन जावेंगे। यह समझाना तो बहुत सहज है। अभी देवी–देवता धर्म का कोई भी है नहीं। सभी कन्वर्ट हो गए हैं और धर्मों में। तुम कोई भी समझाओ तो पहले–2 अक्षर ही बाप का दो। बाप समझाते हैं। और धर्मों में कितने चले गये हैं। बौद्धी, मुसलमान ढेर बन गये हैं। तलवार के जोर से बहुत मुसलमान बने हैं। बौद्धी भी बहुत बने हैं। एक बार ही स्पीच की तो हजारों बौद्धी बन गये। क्रिश्चियन लोग भी ऐसे आकर स्पीच करते थे। तुम्हारे भगवान राम की स्त्री चुराई गई। तुमको लज्जा नहीं आती। तुम्हारे कृष्ण के लिए कहते हैं वह इतना विकारी था जो भगाकर ले गया। सारा दोष ही उनपर रख दिया है। कितना विकारी था। हमारे क्रिश्चियन की ऐसी कोई बात नहीं। हमारे पास जो रहते उनको यहां वालों से तीन गुण(ा) जास्ती वेतन मिलता है। हमारे पास बहुत सुख है। ऐसे–2 बातें सुनाकर कितने क्रिश्चियन बना देते। सबसे जास्ती आदमशुमारी उन्हों की है। तो अभी तुम बच्चों की बुद्धि में सारा सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। तब ही बाप कहते हैं तुम हो स्वदर्शन चक्रधारी। स्वदर्शन चक्र विष्णु को दिखाते हैं। मनुष्य यह थोड़े ही समझते कि विष्णु को क्यों दिया है। स्वदर्शन चक्रधारी कृष्ण को या नारायण को कहते हैं। यह भी समझाना चाहिए ना इन्हों का क्या कनेक्शन है। कृष्ण को, नारायण को, विष्णु को यह चक्र क्यों दिया है। हैं तीनों एक ही। वास्तव में यह स्वदर्शन चक्र तो तुम ब्राह्मणों के लिए ही है। तुम ही स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो ज्ञान से। बाकी तो स्वदर्शन चक्र कोई मारने काटने का नहीं है। यह ज्ञान की बातें हैं। जितना तुम्हारा यह स्वदर्शन चक्र ज्ञान का फिरेगा उतना ही तुम्हारे पाप भस्म होंगे। बाकी सिर काटने की कोई बात नहीं। चक्र कोई हिंसा का नहीं है। चक्र तो तुमको अहिंसक बनाता है। कहां की बात कहां ले गये हैं। सिवाय बाप के कोई समझा न सके। तुम मीठे–2 बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिए। अभी तुम समझते हो हम आत्मा हैं। पहले तुम अपन को आत्मा भी भूल गये तो घर भी भूल गये। आत्मा क्या है, वह भी भूल गये थे। आत्मा को तो फिर भी आत्मा कह(ते) थे। परमात्मा के लिए तो ठिक्कर–भित्तर में कह देते हैं। आत्माओं के बाप को कितनी गाली देते हैं। आत्मा के लिए नहीं कहेंगे कि ठिक्कर–भित्तर में है। कण–कण में आत्मा है। परमात्मा के लिए कितनी गाली दे देते हैं। जनावरों की तो बात ही नहीं। पढ़ाई आदि मनुष्यों की ही होती है। अभी तुम जानते हो हम इतने जन्म यह बने हैं। 84 जन्म पूरे किये। बाकी 84 लाख तो हैं नहीं। मनुष्य कितना अज्ञान अंधेर में है। इसके लिए कहा जाता है ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अंधेर विनाश। आधा कल्प द्वापर कलियुग है अंधियारा और आधा कल्प सतयुग त्रेता है सोझरा। दिन और रात, सोझरे और अंधियारे का यह ज्ञा(न) है। यह बेहद की बात है। आधा कल्प दिन, आधा कल्प रात। अंधियारे में आधा कल्प कितनी ठोकरें खानी पड़ती हैं। बहुत भटकना होता है। स्कूल में जो पढ़ते हैं उनको भटकना नहीं कहा जाता। सतसंगों में मनुष्य कितना भटकते हैं। आमदनी कुछ भी नहीं होती और ही घाटा; इसलिए उनको भटकना कहा जाता है। भटकते–2 धन–दौलत आदि सभी गंवाये कंगाल बन पड़े हो। इस पढ़ाई में अभी जो जितना–2 अच्छी तरह धारण कर और करावेंगे उसमें फायदा ही फायदा है। ब्राह्मण बन गया फायदा ही फायदा है। तुम जानते हो हम ब्राह्मण ही स्वर्गवासी बनते हैं। स्वर्गवासी तो सभी बनेंगे फिर उसमें भी ऊँच पद पाने तुम पुरुषार्थ करते हो। बाप कहते हैं अभी सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। तुम खुद कहते हो बाबा आकर हमको वानप्रस्थ या पवित्र दुनियां में ले जाओ। दुनियां तो एक ही है। वह है आत्माओं की दुनियां। निराकारी दुनियां। यह है साकारी दुनियां। तुम बच्चों की बुद्धि में है साकारी दुनियां कितनी बड़ी है। निराकारी दुनियां कितनी छोटी है। यहां तुमको रहने करने लिए, घूमने–फिरने लिए कितनी

बड़ी जमीन है। वहां तो वह बात ही नहीं। शरीर ही नहीं, पार्ट बजता ही नहीं। स्टार्स मिसल आत्माएं खड़ी हैं। यह कुदरत है ना। सूर्य, चान्द, सितारे कैसे खड़े हैं रोशनी देने लिए। तुम कह न सकेंगे वह किस आधार पर खड़े हैं। आत्माएं भी ब्रह्म महतत्व में खड़ी हैं किस आधार पर ? अपने आधार पर नैचरल खड़ी हैं। पहले–2 तो यह समझना है हम दुःखी जो बने हैं सो फिर सुखी कैसे बनें। बाप को ही पुकारते हैं। ओ गॉडफादर। हमको दुःख से आकर लिबरेट करो। गाइड भी करो। हमने बहुत यज्ञ, तप आदि किये हैं; परन्तु आप से मिलने का रास्ता मिला ही नहीं। बाप कहते हैं मैं तो ड्रामा अनुसार अपने समय पर ही आता हूं। वह है भक्ति का कलट। यह है ज्ञान का कलट। अभी भक्ति कलट पूरा होता है। ज्ञान कलट शुरू होता है। ज्ञान जिन्दाबाद भक्ति मुर्दाबाद। यह भी तुम बच्चे जानते हो भक्ति मुर्दाबाद हो जावेगी। फिर ज्ञान ही ज्ञान रहेगा। भक्ति का नाम नहीं। भक्ति है तो ज्ञान का नाम निशान नहीं। यह भी बाप बैठ बतलाते हैं। बाप तो है निराकार। उनको रथ भी जरूर लेना पड़ता है। जिस रथ पर ही कल्प–2 आते हैं। शिवबाबा कहते हैं मैं कल्प–2 इस रथ पर ही आता हूँ। इनको भी पहचान देता हूं। इनकी ही बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। तुम बहुतों को समझाते हो। कहां पूरा समझा नहीं सकते हो इसलिए रोज–2 बाबा समझाते हैं। तो पक्के हो जावें। प्रदर्शनी, म्युजियम आदि में तुम्हारे पास कितने आते हैं। पुरुषार्थ करते हैं रोज आते हैं फिर बच्चे बन जाते हैं। बच्चों में भी जो बाप की सेवा में लग जाते हैं वही ऊँच पद पाते हैं। जितना जो सर्विस करते हैं। यह तो समझते हो बाहर में रहने वाले यहां रहने वालों से जास्ती सर्विस करते हैं। जास्ती सर्विस करने वाले ही ऊँच पद पाते हैं। इसलिए भील और अर्जुन का मिसाल है। अर्जुन ने हरा लिया। भील होशियार निकला। तो बाप समझाते हैं ऐसे मत समझो बाहर रहने वाले ऊँच पद नहीं पा सकते हैं। बहुत अच्छी रीत पा सकते हैं। बाहर में रहकर भी बहुत सर्विस कर सकते हैं। बान्धेलियां हैं, घर बैठे भी कितना याद करती हैं। सुना है, बाबा आया हुआ है ब्रह्मा के तन में। बहुतों को सा० भी होता रहता है। सफेद पोश का। फिर बाल कृष्ण का भी होता है। ऐसे नहीं कि कृष्ण के भक्त बहुत भक्ति करते हैं तब सा० होता है। नहीं। अनायास ही सा० हो जाता है। उनको दिखलाते हैं ब्रह्मा द्वारा तुम यह पद पा सकते हो। ड्रामा में यह नूँध है। बाकी करने–कराने वाला कोई है नहीं। तुम कदम–2 जो भी चलते हो वह ड्रामा अनुसार। ड्रामा तुमको पुरुषार्थ भी जरूर करावेगा। मनुष्य तो ड्रामा को जानते ही नहीं। वह समझते हैं ईश्वर सर्वशक्तिवान है। ईश्वर कहते हैं ड्रामा सर्वशक्तिवान है। मैं भी ड्रामा के बन्धन में हूँ। जो तुम्हारी सर्विस में आकर उपस्थित हुआ हूँ। मेरे हाथ में नहीं है कोई दुःखी हो और मैं आ जाऊं। ऐसे तो बहुत ही दुःखी होते रहते हैं। फैमन पड़ती रहती है ऐसे मैं नहीं आता हूँ। मैं ड्रामा के बन्धन में हूँ। पूरे 5000 वर्ष बाद मुझे आना ही है। यह बाप आकर समझाते हैं। तो इस समय तुम बच्चों को पुरुषार्थ करना है ऊँच पद पाने लिए। पुरुषार्थ बिगर कब प्रारब्ध मिलती नहीं। बच्चा रोवेगा तब ही उनको पानी मिलेगा। पुरुषार्थ से ही प्रारब्ध मिलती है। यह है तुम्हारा बहुत ऊँच पुरुषार्थ। बाप कहते हैं मुझे याद करो। जितना याद की यात्रा में रहेंगे उतना पाप कटते जावेंगे। नॉलेज यह भी बाप बहुत समझाते हैं। चक्र का नॉलेज भी समझो अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना भी सहज है। तुम बाप के बच्चे ब्राह्मण बने हो सो फिर देवता जरूर बनेंगे। पुरुषार्थ करते रहते हो जैसा पुरुषार्थ ऐसा प्रारब्ध। बाप समझाते तो बहुत अच्छी तरह से हैं। कोई अच्छी रीत धारण करते हैं। बच्चों को यह तो पता है यह नॉलेज घर–2 में पहुंचानी है। बाप का परिचय देना है। बाप है ही स्वर्ग का रचयिता। शिवजयन्ति का अर्थ क्या है। शिव है बेहद का बाप। शिवजयन्ति माना नई दुनियां की जयन्ति। नई दुनियां जयन्ति माना आदि सनातन देवी–देवता धर्म की जयन्ति। कितनी सहज बात है। बाप बैठ बच्चों को प्यार से समझाते हैं। धारण कराते हैं जितना–2 धारण और कराते रहेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।